श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

महाशिवरात्रि

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

मन्त्र जिसकी कोई सीमाएँ नहीं

महाशिवरात्रि के सत्संग के दौरान जब श्रीगुरुमाई ने बोलना आरम्भ किया और उन्होंने हम सबको धन्यवाद दिया कि हमने मन्त्र गाने हेतु समय दिया, तब मुझे वही जाना-पहचाना-सा कान्तिमान प्रकाश अपने हृदय के चारों ओर महसूस हुआ। निस्सन्देह, मैं जानती थी कि हम सब इसीलिए यहाँ वैश्विक हॉल में एकत्र हुए हैं—गुरुमाई जी के साथ मन्त्रधुन गाने के लिए। फिर भी, जब गुरुमाई जी ने मन्त्र गाने के लिए हमें *धन्यवाद* दिया, तो वह क्षण मेरे लिए एक "अहाऽ!" वाला क्षण यानी एक मर्मस्पर्शी क्षण बन गया जिसमें मेरे अन्दर कुछ उजागर हुआ। मुझे एहसास हुआ कि हममें से हर एक ने सोच-समझकर यह निर्णय लिया है [भले ही यह सबसे सरल, सबसे स्पष्ट, सबसे सहज-स्वाभाविक निर्णय था]। यह *निर्णय हमारा अपना था* कि हम सत्संग में भाग लें, कि मन्त्र गाने के इस विशेष रूप से मूल्यवान उद्यम के लिए अपना समय समर्पित करें।

गुरुमाई जी ने समझाया कि महाशिवरात्रि पर मन्त्रगान करना शुभ होता है, यह अभ्यास फलद्रूप होता है, और मन्त्र का अमृतरस अत्यन्त शीतल करने वाला होता है—विशेषकर तब जब संसार की अग्नि प्रचण्ड हो। मुझे स्पष्टतः याद है कि जब गुरुमाई जी ने यह कहा तब मेरे अन्दर से क्या प्रतिक्रिया उभरी; मुझे महसूस हुआ कि उनके शब्दों में निहित सत्य मेरे अन्दर मानो किसी आदिकालीन लय पर स्पन्दित हो रहा हो, जैसे मेरा हृदय भगवान शिव के डमरू की ताल पर धड़क रहा हो। मैंने मन्त्र की कल्पना एक ऐसे लेप के रूप में की जो न केवल मेरी अपनी सत्ता के लिए, बल्कि इस सकल संसार के लिए सुखदायक था, सुकून दे रहा था। मुझे इस बात का और भी गहराई से एहसास हुआ कि हम जो कर रहे हैं, यानी सत्संग में अपनी श्रीगुरु के साथ, एक संघम् के रूप में मन्त्रधुन गा रहे हैं, वह कितना महत्त्वपूर्ण है।

परिवर्तन लाने की जो शक्ति हमारे अन्दर मौजूद है, गुरुमाई जी के शब्द मुझे उस शक्ति का स्मरण भी करा रहे थे। यही नहीं, बल्कि परिवर्तन लाना हमारा *उत्तरदायित्व* भी है। हमें अपनी श्रीगुरु से चैतन्य मन्त्र प्राप्त हुआ है। मन्त्र, ईश्वर का नाद-रूप है। मैंने इस बारे में पहली बार गुरुमाई जी से सुना था और बाद में मैंने इस विषय में शिव पञ्चाक्षरस्तोत्रम् में और अधिक पढ़ा। यह अवधारणा जो असीमित रूप से चित्ताकर्षक है, यह सच्चाई कि पावन ध्वनि में भगवान का वास है, तभी से मेरे मन में बसी हुई है।

शिव पञ्चाक्षरस्तोत्रम्, मन्त्र के पाँच अक्षरों [न-मः शि-वा-य] के विषय में महान ऋषि, आदि शंकराचार्य द्वारा रचित स्तोत्र है जिसमें वे वर्णन करते हैं कि इन वर्णों में भगवान शिव का वास है। यह मन्त्र भगवान शिव का वेष है, उनका स्वरूप है। इससे भी बढ़कर बात यह है कि इस स्तोत्र में आदि शंकराचार्य भगवान शिव के—और विस्तृत अर्थ में, मन्त्र के—जो वर्णन प्रस्तुत करते हैं, वे अत्यन्त प्रभावशाली हैं। श्रीशंकराचार्य बताते हैं कि भगवान शिव का अभिषेक गंगाजल से किया जाता है और उनके शरीर पर चन्दन का लेप लगाया जाता है; पारम्परिक रूप से ये दोनों ही शीतलकारी पदार्थ हैं। इसमें जो अर्थ निहित है, वह स्पष्ट है : इस मन्त्र में शीतलकारी, शान्तिदायक, उपशमनकारी गुण हैं। कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिन पर लोग युद्ध छेड़ देते हैं और कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो उतने ही सशक्त रूप में शान्ति स्थापित करते हैं। ये वही शब्द हैं—'ॐ नमः शिवाय'।

मेरा अनुभव रहा है कि मन्त्र की शक्ति के विषय में यह दृढ़कथन केवल सैद्धान्तिक नहीं है। यह कोई काल्पनिक धारणा नहीं है। मैं बता नहीं सकती हूँ कि प्राकृतिक व मानव-निर्मित आपदाओं के आने पर श्रीगुरुमाई ने जो संकीर्तन-सत्र व सप्ताह आयोजित किए हैं, उनके विषय में मैंने सिद्धयोगियों से कितने वृत्तान्त सुने हैं। ऐसा बार-बार हुआ है कि श्रीगुरुमाई के सत्संग के परिणामस्वरूप उन आपदाओं की भीषणता कम हुई है, और कुछ घटनाएँ तो होने से *बच ही गईं।* ऐसा इतनी बार हुआ है कि उसे संयोग या भाग्यवश होने वाला लाभ कहकर नकारा नहीं जा सकता। गुरुमाई जी ने सिद्धयोग वैश्विक हॉल के लिए जगमगाते नीलमण्डप की छवि प्रदान की है; मेरा मानना है कि मन्त्रधुन गाने से, हम इस नीलमण्डप के भीतर निर्मित होने वाली शक्ति और वातावरण को सुदृढ़ कर रहे हैं। संरक्षण के जिस प्रकाश को हम पोषित कर रहे हैं वह अधिक घनीभूत, अधिक सामर्थ्यशाली हो जाता है। और हम अपने आपको संरक्षणदायी प्रकाश से ढक लेते हैं। हम जहाँ भी जाते हैं, यह प्रकाश हमारे साथ जाता है।

मन्त्र का प्रकाश, सत्संग का प्रकाश कैसे सुस्पष्ट रूप से बाहर की ओर प्रसरित होता है, इस विषय में एक हाल ही का उदाहरण मुझे याद है। वर्ष २०२० की शुरुआत हुई ही थी। उस समय ऑस्ट्रेलिया के

जंगलों में लगी आग से भयंकर विनाश हो रहा था। ऑस्ट्रेलिया के लोगों, पशुओं और वहाँ की धरती पर जो बीत रही थी, उससे गुरुमाई जी बहुत व्यथित थीं। अतः, ३ जनवरी २०२० को गुरुमाई जी ने श्री मुक्तानन्द आश्रम में एक सत्संग का आयोजन किया था जिसका एकमात्र उद्देश्य था, ऑस्ट्रेलिया के लिए वर्षा के रूप में आशीर्वादों का आवाहन करना। इस सत्संग में हमने 'ॐ नमः शिवाय' की मन्त्रधुन गाई। गुरुमाई जी के मार्गदर्शन में, आदिनाद 'ॐ' गाते हुए हमने वर्षा की ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य भी बजाए थे।

अगली शाम, ४ जनवरी को, गुरुमाई जी ने एक और सत्संग किया जो विशेष रूप से ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड के लिए सीधा वीडिओ प्रसारण था। प्रतिभागियों ने, एक बार पुनः ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रार्थनाएँ व आशीर्वाद भेजने का संकल्प मन में रखते हुए श्रीगुरुगीता का पाठ किया। गुरुमाई जी ने संघम् की शक्ति के बारे में बताया है और यह भी कहा है कि जब हम एकस्वर होते हैं, तब हमारे पास संसार का उत्थान करने की सामर्थ्य होती है। हमारे पास मांगल्य को बढ़ाने की सामर्थ्य होती है। इन सत्संगों में भगवान शिव का आवाहन करते हुए—जब हमने आदि गुरु को नमन किया; जब हमने उन देव से प्रार्थना की जिनका नाम 'शान्त' है और जो शान्ति के मूर्तरूप हैं; जब हमने 'पशुपति' अर्थात् समस्त प्राणियों के रक्षक से प्रार्थना की, तब मुझे बिल्कुल यही महसूस हो रहा था।

उसके बाद के घण्टों व दिनों में ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न भागों में रह रहे सिद्धयोगियों ने, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को लिखकर भेजा कि देशभर के जो भाग अब तक आग व सूखे से संतप्त थे, वहाँ लगातार बारिश होने लगी है। हालाँकि उस समय तक आग इतनी फैल चुकी थी कि उसे पूरी तरह बुझाने के लिए कुछ और सप्ताह लग गए, तथापि गुरुमाई जी के सत्संगों का ठोस प्रभाव हुआ था। चीज़ें बदलने लगी थीं। हमें अकल्पनीय क्षति पहुँची ज़रूर थी, तथापि मन्त्र का अमृतरस, वस्तुतः, संसार की अग्नि को शान्त कर, उसे शीतल कर रहा था।

जैसा कि इस उदाहरण में देखा जा सकता है, मन्त्र की शक्ति दूर-दूर तक पहुँचती है—वस्तुतः, इतनी दूर तक कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मन्त्र-जप करने या उसके लाभों का अनुभव करने के लिए एक सिद्धयोगी होना भी ज़रूरी नहीं है। बहुत-से लोगों को 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र जपने से शान्ति मिली है, सान्त्वना मिली है, फिर चाहे वे किसी सिद्धयोगी के मित्र हों, या उनके परिवार के सदस्य या बस ऐसे कोई हों जिनका सद्भाग्यवश किसी न किसी रूप में मन्त्र से परिचय हो गया हो।

मैं यह जानना चाहती हूँ कि मन्त्र की शक्ति से जुड़े अपने अनुभवों को आप किस तरह याद करते रहे हैं। मन्त्र की शक्ति के विषय में आपने जो कहानियाँ सुनी हैं, क्या आपको वे याद आ रही हैं? क्या आप मन्त्र से जुड़े अपने अनुभवों को जर्नल में लिखते रहे हैं? क्या आप मन्त्र के विषय में, मन्त्र से जुड़े अपने अनुभवों के विषय में दूसरों के साथ चर्चा कर रहे हैं? क्या आप उन्हें प्रेरित कर रहे हैं कि वे स्वयं मन्त्र-जप का अभ्यास आरम्भ करें?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।